SAMPLE CONTENT

PERFECT

हिंदी युवकभारती

कक्षा ग्यारहवीं

चंद्रभूषण शुक्ल
B.M.M.- Journalism

ज्योति नाविक
M.A., B.Ed.

Target Publications® Pvt. Ltd.

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे
द्वारा निर्धारित नवीन पाठ्यपुस्तक पर आधारित

कक्षा ग्यारहवीं

हिंदी युवकभारती

विशेषताएँ

- नवीन पाठ्यपुस्तक पर आधारित
- प्रत्येक पाठ का परिच्छेद व पद्यांश में विभाजन
- विविध आकलन कृतियों का समावेश
- काव्य सौंदर्य व रसास्वादन की कृतियों का समावेश
- सभी लघूत्तरी प्रश्नों के सरल व सटीक उत्तरों का समावेश
- अधिकाधिक अभ्यास हेतु व्याकरण का प्रत्येक गद्य व पद्य में समावेश
- विद्यार्थियों के मार्गदर्शन हेतु स्वतंत्र भाषा अध्ययन (व्याकरण) विभाग
- 'विशेष अध्ययन हेतु' व 'व्यावहारिक हिंदी' विभाग के सभी प्रश्नों के सटीक उत्तर
- विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन हेतु 'परिशिष्ट' का कृतियों सहित सविस्तार समावेश
- ज्ञानवर्धन एवं मनोरंजन हेतु 'आओ जानें' व 'खेल-खेल में' कृतियों का समावेश

Sample Content

Printed at: **India Printing Works,** Mumbai

© *Target Publications Pvt. Ltd.*
No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, C.D. ROM/Audio Video Cassettes or electronic, mechanical including photocopying; recording or by any information storage and retrieval system without permission in writing from the Publisher.

Balbharati Registration No.: 2018MH0022

TEID: 2014

P.O. No. 2051

प्रस्तावना

प्रिय विद्‌यार्थियो!

ग्यारहवीं कक्षा में आपका सहर्ष स्वागत है। शैक्षणिक यात्रा के इस नए पड़ाव पर मानसिक चिंता व चिंतन दोनों का बढ़ना स्वाभाविक है। शिक्षा की पारंपरिक पद्‌धतियों में परिवर्तन कर उसे आधुनिक स्वरूप में ढालने व शिक्षा को व्यावहारिक जगत से जोड़ने के उद्‌देश्य से शिक्षण मंडळ ने नवीन पाठ्‌यपुस्तक का निर्माण किया है। इसके माध्यम से हिंदी भाषा के सामाजिक व साहित्यिक महत्त्व का प्रतिपादन करने के साथ ही रोजगार में हिंदी भाषा की भूमिका के प्रति जागरूकता फैलाने का भी सफल प्रयास किया गया है। शिक्षण मंडळ के उठाए गए इस सराहनीय कदम से विद्‌यार्थियों के सर्वांगीण विकास के साथ ही उनके मन में हिंदी भाषा के प्रति रुचि व प्रेम बढ़ना स्वाभाविक है।

नवीन पाठ्‌यपुस्तक को आधार बनाकर **टार्गेट पब्लिकेशंस** द्‌वारा **हिंदी युवकभारती कक्षा ग्यारहवीं** की मार्गदर्शक पुस्तिका का निर्माण किया गया है। विद्‌यार्थियों में भाषिक क्षमता प्रबल करने अर्थात श्रवण, भाषण, वाचन एवं लेखन में उन्हें दक्ष बनाना ही इस पुस्तिका का ध्येय है। यह पुस्तिका भाषा की जटिलता को दूर कर विद्‌यार्थियों में विषय के प्रति रुचि निर्मित करने में सक्षम है। इसका मुख्य कारण पुस्तिका की सरल व सहज भाषा शैली है। भाषाई शिक्षा बोझिल न हो इसका विशेष ध्यान इस पुस्तिका में रखा गया है। इसके फलस्वरूप पाठ से संबंधित रोचक तथ्यों का यहाँ आवश्यकतानुसार सविस्तार वर्णन किया गया है। इससे पाठ की रोचकता और बढ़ जाती है। शिक्षा की वर्तमान पद्‌धति व उद्‌देश्यों को ध्यान में रखते हुए यहाँ जगह-जगह मनोरंजक व उद्‌देश्यपूर्ण कृतियों का भी समावेश किया गया है। इससे न सिर्फ विद्‌यार्थियों का मनोरंजन होता है, बल्कि उनकी कल्पनाशीलता, सृजनशीलता व ज्ञान में भी वृद्‌धि होती है। इस तरह के प्रयोग हिंदी भाषा के प्रति विद्‌यार्थियों का आकर्षण बढ़ाने में सहायक सिद्‌ध होंगे। यह पुस्तिका विद्‌यार्थियों के सर्वांगीण विकास के साथ ही शिक्षा के नए मानक तय करते हुए पग-पग पर उनका पथप्रदर्शन करेगी। इस पुस्तिका के संपूर्ण स्वरूप को समझने के लिए इसकी संपूर्ण विशेषताएँ उदाहरण सहित आगे के पृष्ठों पर सविस्तार दी गई हैं।

शैक्षणिक वर्ष की समुचित तैयारी हेतु निर्मित गागर में सागर यह पुस्तिका आप सभी सुधी जनों के हाथों में सौंपते हुए हमें अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह विद्‌यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी व ज्ञानवर्धक सिद्‌ध होगी और उनका सही दिशा में मार्गदर्शन करेगी।

पुस्तिका की उत्कृष्टता बढ़ाने के लिए सभी अमूल्य सुझाव आमंत्रित हैं। हमारा ई-मेल है: **mail@targetpublications.org**

उज्ज्वल भविष्य हेतु ढेरों शुभकामनाएँ !

प्रकाशक

संस्करण: द्‌वितीय

Sample Content

Disclaimer

This reference book is transformative work based on 'हिंदी युवकभारती; प्रथमावृत्ति: २०१९ पहला पुनर्मुद्रण; २०२०' published by the Maharashtra State Bureau of Textbook Production and Curriculum Research, Pune. We the publishers are making this reference book which constitutes as fair use of textual contents which are transformed by adding and elaborating, with a view to simplify the same to enable the students to understand, memorize and reproduce the same in examinations.

This work is purely inspired upon the course work as prescribed by the Maharashtra State Bureau of Textbook Production and Curriculum Research, Pune. Every care has been taken in the publication of this reference book by the Authors while creating the contents. The Authors and the Publishers shall not be responsible for any loss or damages caused to any person on account of errors or omissions which might have crept in or disagreement of any third party on the point of view expressed in the reference book.

© reserved with the Publisher for all the contents created by our Authors.

No copyright is claimed in the textual contents which are presented as part of fair dealing with a view to provide best supplementary study material for the benefit of students.

विशेषताएँ

परिचय / शब्द संसार – रचनाकार, उनकी प्रमुख कृतियाँ, विधा व पाठ के विस्तृत परिचय का समावेश किया गया है। पाठ में आए कठिन शब्दों के सरल हिंदी व अंग्रेजी अर्थ दिए गए हैं। इसके साथ ही पाठ में आए मुहावरों का अर्थ सहित समावेश किया गया है।

सरल अर्थ / भावार्थ – कविताओं को सरलता से समझने के लिए उनके सरल अर्थ दिए गए हैं।

परिच्छेद / पद्यांश में विभाजन – प्रत्येक पाठ का परिच्छेद / पद्यांश में विभाजन कर उन पर आधारित कृतियों का समावेश किया गया है।

पाठ पर आधारित कृतियाँ / लघूत्तरी प्रश्न – संपूर्ण पाठ पर आधारित कृतियों व लघूत्तरी प्रश्नों को विशेष इन विभागों में समाहित किया गया है।

रसास्वादन – प्रत्येक पद्य में मुद्दों के साथ ही पूर्ण कविता पर आधारित रसास्वादन की कृतियों का समावेश किया गया है।

काव्य सौंदर्य – पद्य पर आधारित काव्य सौंदर्य की कृतियों का यहाँ उत्तरों के साथ समावेश किया गया है।

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान – साहित्य संबंधी पूछी गईं कृतियाँ इस विभाग में शामिल की गई हैं।

भाषा अध्ययन (व्याकरण) – प्रत्येक गद्य व पद्य में व्याकरण के विभिन्न घटकों के साथ ही पारिभाषिक शब्दावली का अभ्यास इस विभाग में समाहित किया गया है। इसके अलावा पुस्तिका में इसका एक अलग विभाग भी दिया गया है। इसमें विभन्न घटकों को विस्तारित रूप से समझाया गया है।

अपठित गद्यांश – इस विभाग में अपठित गद्यांशों का अधिकाधिक कृतियों सहित समावेश किया गया है।

विशेष अध्ययन हेतु – इस विभाग में नाटक विधा व दो नाटकों पर आधारित कृतियों का उत्तर सहित समावेश किया गया है।

व्यावहारिक हिंदी – हिंदी भाषा के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए रोजगार के क्षेत्र में इस भाषा की उपयोगिता पर आधारित सभी पाठों के अंतर्गत पूछी गई पाठ पर आधारित व व्यावहारिक प्रयोग की कृतियों का उत्तरों के साथ समावेश किया गया है।

आओ जानें / खेल-खेल में – पाठ में आए विभिन्न ज्ञानवर्धक मुद्दों का सविस्तार वर्णन इस विशेष विभाग में किया गया है। पाठ के अंत में आवश्यकतानुसार बौद्धिक क्षमता के विकास हेतु रोचक कृतियाँ उत्तर सहित शामिल की गई हैं।

Sample Content

अनुक्रमणिका

क्र.	पाठ का नाम	रचनाकार	पृष्ठ
१.	प्रेरणा	त्रिपुरारि	१
२.	लघुकथाएँ	श्रीमती संतोष श्रीवास्तव	८
	(अ) उषा की दीपावली		
	(आ) मुस्कुराती चोट		
३.	पंद्रह अगस्त	गिरिजाकुमार माथुर	१५
४.	मेरा भला करने वालों से बचाएँ	डॉ. राजेंद्र सहगल	२१
५.	मध्ययुगीन काव्य		
	(अ) भक्ति महिमा	संत दादू दयाल	३२
	(आ) बाल लीला	संत सूरदास	३७
६.	कलम का सिपाही	डॉ. सुनील देवधर	४२
७.	स्वागत है!	शाम दानीश्वर	५४
८.	तत्सत	जैनेंद्र कुमार	६२
९.	गजलें	डॉ. राहत इंदौरी	७२
	(अ) दोस्ती		
	(आ) मौजूद		
१०.	महत्त्वाकांक्षा और लोभ	पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी	७९
११.	भारती का सपूत	रांगेय राघव	८६
१२.	सहर्ष स्वीकारा है	गजानन माधव 'मुक्तिबोध'	९६
•	अपठित गद्यांश		१०२
	विशेष अध्ययन हेतु		
१३.	नुक्कड़ नाटक	अरविंद गौड़	१०९
	(अ) मौसम		
	(आ) अनमोल जिंदगी		
	व्यावहारिक हिंदी		
१४.	हिंदी में उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएँ	डॉ. दामोदर खड़से	१२०
१५.	समाचार: जन से जनहित तक	डॉ. अमरनाथ 'अमर'	१२३
१६.	रेडियो जॉकी	अनुराग पांडेय	१३०
१७.	ई-अध्ययन: नई दृष्टि	संकलन	१३४

Sample Content

भाषा अध्ययन (व्याकरण)			
१.	अलंकार		१३७ - १४७
२.	रस		
३.	काल		
४.	मुहावरे		
५.	शुद्धाक्षरी लेखन		
६.	विरामचिह्न		
परिशिष्ट			
१.	रसास्वादन		१४८ - १५१
२.	ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हिंदी साहित्यकार		
३.	हिंदी साहित्यकारों के मूल नाम और उनके विशेष नाम		
४.	मुद्रित शोधन		

Sample Content

Sample Content

३ पंद्रह अगस्त

-- गिरिजाकुमार माथुर (जन्म-१९१९, मृत्यु-१९९४)

परिचय

रचनाकार

गिरिजाकुमार माथुर जी का जन्म अशोक नगर (मध्य प्रदेश) में हुआ। इनकी आरंभिक शिक्षा झाँसी में तथा स्नातकोत्तर शिक्षा लखनऊ में हुई। इन्होंने ऑल इंडिया रेडियो, दिल्ली और आकाशवाणी लखनऊ में अपनी सेवा प्रदान की और संयुक्त राष्ट्र संघ, न्यूयॉर्क में सूचनाधिकारी का पदभार भी सँभाला।

प्रमुख कृतियाँ

मंजीर, नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख चमकीले, जो बँध नहीं सका, साक्षी रहे वर्तमान, मैं वक्त के हूँ सामने (काव्य-संग्रह) आदि।

पाठ

प्रस्तुत कविता गीत विधा में लिखी गई है। इसमें एक मुखड़ा और दो या तीन अंतरे होते हैं। यहाँ कवि ने स्वतंत्रता के उत्साह को अभिव्यक्त करने के साथ ही देशवासियों और सैनिकों को हर क्षण सजग और जागरूक रहने के लिए प्रेरित किया है।

शब्द संसार

शब्दार्थ

अंबुधि	सागर, समुद्र (ocean)
अचल	अडिग (invariable)
इंदु	चंद्रमा (moon)
कोर	किनारा (bank)
ज्वार	समुद्र के जल में उठने वाली ऊँची लहरें (high tide)
डोर	धागा (thread)
दीप्तिमान	प्रकाशमान, कांतिमान, प्रभायुक्त (radicant)
पतवार	नाव खेने का साधन (helm)
पहरुए	पहरेदार, प्रहरी (guard)
प्रतिमा	मूर्ति (idol)
प्रथम	पहला (first)
प्रभंजन	आँधी, तूफान (strom)
प्रवहमान	बहता हुआ (flowing)
बंदिनी	कैदी महिला (prisoner)
मुक्ता	मोती (pearl)
मृत	मरा हुआ (dead)
विगत	पुरानी (old)
विषम	विकट, भयानक (dangerous)
शेष	बाकी (remaining)

सरल अर्थ/भावार्थ

१. आज जीत की रात .... पहरुए, सावधान रहना!

अर्थ: कवि सैनिकों से कहता है कि आज जीत की रात है, इसलिए तुम सभी सावधान रहना। जश्न की रात होने के कारण आज देश के द्वार भी खुले हुए हैं। तुम दीपक की तरह हर तरफ प्रकाश फैलाते रहो, जिससे कहीं अँधेरा न होने पाए अर्थात दुश्मन देश में घुस न पाए। यह स्वर्ग के समान स्वतंत्रता हमारी पहली मंजिल है। यह देशवासियों के संघर्ष की पहली रत्न हिलोर अर्थात पहला फल है। इसके आगे मोतियों की इस माला को पूर्ण करना है अर्थात देश व देशवासियों के विकास व समृद्धि के लिए आगे बहुत कुछ करना बाकी है। स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद भी हमारे देश से दुख की काली छाया का पूरी तरह से अंत नहीं हुआ है। हे देश के पहरेदारो! इस नवयुग की पतवार को हाथों में थामे सागर की भाँति महानता को दर्शाते हुए तुम सदा सतर्क रहना और हमारी रक्षा करना।

२. विषम शृंखलाएँ टूटीं .... पहरुए, सावधान रहना!

अर्थ: प्रस्तुत पंक्तियों में कवि सैनिकों से कहता है कि परतंत्रता की जंजीरें टूट चुकी हैं और अब हम स्वतंत्रता से अपनी मनचाही दिशा में कहीं भी आ-जा सकते हैं। युगों-युगों से जो हवाएँ बंदी की तरह लग रही थीं, वे अब स्वतंत्र होकर तूफान की तरह चलने लगी हैं। इसके अतिरिक्त हमारी जिन सीमाओं पर अतिक्रमण हुआ है, वे अब हमारे सामने प्रश्नचिह्न बनकर खड़ी हो गई हैं। विदेशी शासकों का राज्य खत्म होने के बाद उनकी प्रतिमाएँ अर्थात उनके चिह्नों को भी देश से उखाड़ फेंका जा रहा है। उनके स्थान पर हमारे स्वतंत्र देश के नए प्रतीक निर्मित हो रहे हैं। हे देश के पहरेदारो! चंद्रमा की भाँति चमकते हुए इस प्रगति के तूफान को तुम सही राह दिखाना और सतर्क रहते हुए सदैव हमारी रक्षा करना।

Sample Content

३. **ऊँची हुई मशाल .... पहरुए, सावधान रहना!**

अर्थ: प्रस्तुत पंक्तियों में कवि सैनिकों से कहता है कि हमने स्वतंत्रता तो प्राप्त कर ली है, लेकिन प्रगति के पथ पर चलना आसान नहीं होगा। शत्रु आज हमारे घर से निकल गया है, लेकिन उसकी छाया अर्थात उसके लौट आने का खतरा हमेशा बना रहेगा। इतने समय तक लगातार शोषित किए जाने से हमारा समाज मृत अर्थात अभावग्रस्त हो गया है। आज हम बहुत कमजोर हैं, लेकिन स्वतंत्रता की जो नई जिंदगी मिली है, उसने सभी में उत्साह भर दिया है। हे देश के पहरेदारो! जनगंगा अर्थात जनता रूपी इस गंगा में प्रगति का जो ज्वार विश्वास के साथ उमड़ रहा है, तुम उसे अपने साथ गतिमान बनाए रखना और सतर्क रहते हुए सदैव हमारी रक्षा करना।

पद्यांश १

पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ क्रमांक ९-१० पर दी गई पंक्तियाँ १ से १५ तक
[आज जीत की रात ....
.... सावधान रहना!]

कृति १ – आकलन

कृ.१. आकृति पूर्ण कीजिए:

जीत की रात के लिए आई विशेषताएँ

उत्तर: १. नए स्वर्ग का प्रथम चरण
२. मंजिल का छोर

कृ.२. आकृति पूर्ण कीजिए:

कवि का पहरेदारों से आवाहन

उत्तर: १. सावधान रहना
२. दीपक के समान अचल रहना
३. सागर की तरह महान बनना

कृ.३. ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों:

१. देश　　२. दुख
३. युग　　४. अंबुधि

उत्तर: १. आज किसके द्वार खुले हैं?
२. किसकी साँवली कोर नहीं मिट सकी है?
३. कवि पहरेदारों को किसकी पतवार थामने के लिए कहता है?
४. कवि पहरेदारों से किसके समान महान बनने के लिए कहता है?

कृ.४. सही/गलत पहचानकर गलत वाक्यों को सही करके पुन: लिखिए:

१. कल जीत की रात है।
२. यह नए स्वर्ग का अंतिम चरण है।
३. जीवन मुक्ता डोर पूरी नहीं हुई है।
४. भारतवासियों के जीवन से सारे दुख समाप्त हो चुके हैं।

उत्तर: १. गलत; आज जीत की रात है।
२. गलत; यह नए स्वर्ग का प्रथम चरण है।
३. सही
४. गलत; भारतवासियों के जीवन से सारे दुख नहीं समाप्त हुए हैं।

कृ.५. संकल्पना स्पष्ट कीजिए:

*१. नये स्वर्ग का प्रथम चरण
२. विगत साँवली कोर

उत्तर: १. अब भारतवासी अंग्रेजों की गुलामी से स्वतंत्र हो चुके हैं और स्वतंत्रता स्वर्ग से कम नहीं होती है। अत: स्वर्ग में हमारा यह पहला चरण है।
२. अंग्रेजों ने जो अत्याचार व शोषण किया है, उसके घाव अब तक नहीं भरे हैं।

कृति २ – शब्द संपदा

कृ.१. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए:

१. जीत　　२. रात
३. स्वर्ग　　४. अंबुधि

उत्तर: १. विजय, जय
२. रात्रि, निशा, रजनी
३. बैकुंठ, जन्नत, बहिश्त, सुरलोक
४. सागर, समुद्र, जलधि

कृ.२. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाइए:

१. सावधान　　२. देश
३. शेष　　४. जीवन

उत्तर: १. असावधान　　२. विदेश
३. अवशेष　　४. आजीवन

Sample Content

कृति ३ – अभिव्यक्ति

*कृ.१. 'देश की रक्षा– मेरा कर्तव्य', इसपर अपना मत स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: 'जननी-जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' अर्थात जननी व जन्मभूमि का स्थान स्वर्ग से भी अधिक ऊँचा व सम्माननीय होता है। जिस प्रकार माता अपने बालक को पाल-पोसकर बड़ा करती है, उसी प्रकार धरती माता भी अपने बच्चों पर अपना सबकुछ न्यौछावर कर देती है। देश की मिट्टी में ही खेल-कूदकर हम बड़े होते हैं। उसी से हमें भोजन, कपड़ा, मकान और सभी जीवनोपयोगी चीजें मिलती हैं। देश की धरती ही हमारी पहचान होती है। देश की सभ्यता और संस्कृति हमें और हम उसे अपनाते हैं। देश हमें एक सभ्य समाज देता है; हमें सुरक्षा प्रदान करता है और हमारी हर जरूरत की पूर्ति कर, हमें अपने पैरों पर खड़ा होने का अवसर प्रदान करता है। अत: हम जिस देश में रहते हैं, उसकी रक्षा करना हमारा नैतिक कर्तव्य होता है।

पद्यांश २

पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ क्रमांक १० पर दी गई पंक्तियाँ १६ से २६ तक
[विषम शृंखलाएँ ....
.... सावधान रहना!]

कृति १ – आकलन

कृ.१. आकृति पूर्ण कीजिए:

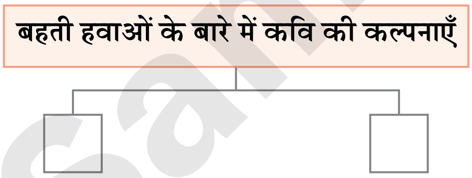

उत्तर: १. आज ये हवाएँ तूफान बनकर बह रही हैं।
२. ये हवाएँ युगों से बंदी थीं।

कृ.२. उचित जोड़ियाँ मिलाइए:

क्र.	अ		ब
१.	विषम	क.	सीमाएँ
२.	युग बंदिनी	ख.	शृंखलाएँ
३.	सिमटी	ग.	सिंहासन
४.	पुराना	घ.	हवाएँ

उत्तर: (१–ख), (२–घ), (३–क), (४–ग)।

*कृ.३. संकल्पना स्पष्ट कीजिए:
१. विषम शृंखलाएँ
२. युग बंदिनी हवाएँ

उत्तर: १. अंग्रेजों के शासनकाल में सभी भारतीय परतंत्रता का जीवन बिता रहे थे। उस समय समाज में ऊँच-नीच और अमीरी-गरीबी का भी भेदभाव था। ये परिस्थितियाँ कष्टकारी जंजीरों में जकड़े रहने जैसा ही था।
२. अंग्रेजों के शासनकाल में हर कोई गुलामी का जीवन बिता रहा था। ऐसा लगता था कि जैसे उस समय की हवाएँ भी उनकी गुलाम बन गई थीं।

कृति २ – शब्द संपदा

कृ.१. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

१. शृंखलाएँ २. दिशा
३. सीमाएँ ४. प्रतिमाएँ

उत्तर: १. **शृंखला** – अर्जुन ने अपनी गुलामी की शृंखला तोड़ दी।
२. **दिशाएँ** – सारी दिशाएँ आज राम के लौटने पर खुशियाँ मना रही हैं।
३. **सीमा** – भारत और पाकिस्तान की सीमा पर सैनिकों का कड़ा पहरा रहता है।
४. **प्रतिमा** – श्री गणेश की प्रतिमा को जल में विसर्जित किया गया।

कृ.२. निम्नलिखित शब्दों से तद्धित बनाइए:

१. विषम २. युग
३. तूफान ४. सावधान

उत्तर: १. विषमता २. युगीन
३. तूफानी ४. सावधानी

कृति ३ – अभिव्यक्ति

कृ.१. परतंत्रता के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।

उत्तर: परतंत्र अर्थात दूसरों के अधीन होना है। जो व्यक्ति दूसरों का गुलाम होता है वह जीवन में कभी सुख नहीं प्राप्त करता है। परतंत्रता एक शाप है। सभी सुख-सुविधाओं से संपन्न होने के बावजूद भी गुलाम व्यक्ति जीवन में कभी सुखी नहीं रह सकता है। गुलाम अपनी क्षमताओं का पूरा उपयोग और विकास नहीं कर पाता है। इंसानों की बात तो दूर की है, सभी सुख-सुविधाएँ होने के बावजूद भी पक्षियों का मन पिंजरे से निकल भागने का करता रहता है। गुलामी न केवल किसी व्यक्ति के बल्कि उसके परिवार, समाज व देश के विकास में

Sample Content

भी बाधक है। अत: गुलामी के सुखी जीवन की अपेक्षा स्वतंत्रता की काँटों भरी राह अधिक अच्छी है।

पद्यांश ३

पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ क्रमांक १० पर दी गई पंक्तियाँ २७ से ३७ तक
[ऊँची हुई मशाल ....
.... सावधान रहना!]

कृति १ – आकलन

*कृ.१. **लिखिए:**

समाज की वर्तमान स्थिति

उत्तर: १. समाज मृत है। २. हमारा घर कमजोर है।

कृ.२. आकृति पूर्ण कीजिए:

भविष्य के संदर्भ में कवि की चेतावनियाँ

उत्तर: १. आगे की डगर बहुत कठिन है।
२. शत्रु की छाया का डर है।

कृ.३. आकृति पूर्ण कीजिए:

कवि का पहरेदारों से आवाहन

उत्तर: १. लहरों की भाँति प्रवाहमान रहना
२. सावधान रहना

कृति ३ – शब्द संपदा

कृ.१. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

१. कठिन २. शत्रु
३. कमजोर ४. सावधान

उत्तर: १. **आसान** – यह बहुत ही आसान सवाल था।
२. **मित्र** – मेरे पाँच मित्र हैं।
३. **मजबूत** – चीन की दीवार बहुत मजबूत है।
४. **असावधान** – भारतीय सेना जब असावधान थी, उसी समय दुश्मनों ने हमला बोल दिया।

कृ.२. निम्नलिखित शब्दसमूहों के लिए एक शब्द लिखिए:

१. जो कभी नहीं मर सकता है –
२. जो प्रवाहित होता रहता है –

उत्तर: १. अमर २. प्रवाहमान

कृति ३ – अभिव्यक्ति

*कृ.१. **'देश के विकास में युवकों का योगदान', इस विषय पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: किसी भी देश की उन्नति या अवनति उस देश के नागरिकों पर निर्भर होती है। यदि देश के नागरिक शिक्षित एवं जिम्मेदार हैं, तो वे आने वाले समय में देश के विकास में अपना योगदान दे सकते हैं। खासकर युवा पीढ़ी देश के लिए बहुत मायने रखती है, क्योंकि आज का युवा ही कल का भविष्य है। यदि वर्तमान समय में देश के युवाओं को अच्छी शिक्षा दी जाए; उनका सही मार्गदर्शन किया जाए और उन्हें उनकी जिम्मेदारियों से अवगत कराया जाए, तो आगे चलकर देश को उनसे बहुत लाभ होगा। यही कारण है कि किसी भी देश का सबसे बड़ा निवेश उसकी युवा पीढ़ी को कहा जाता है। अत: देश के विकास के लिए युवाओं का सर्वांगीण विकास आवश्यक है।

काव्य सौंदर्य

*कृ.१. **आशय लिखिए:**
"युग बंदिनी हवाएँ ... टूट रहीं प्रतिमाएँ।"

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ गिरिजाकुमार माथुर जी द्वारा रचित 'पंद्रह अगस्त' कविता से ली गई हैं। यहाँ कवि ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद समाज व देश की वर्तमान स्थिति का सूक्ष्म चित्रण किया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने स्वतंत्रता के बाद हो रहे बदलाव का चित्रण किया है। कवि कहता है कि युगों-युगों से जो हवाएँ बंदी की भाँति लग रही थीं, वे अब स्वतंत्र होकर तूफान की भाँति चलने लगी हैं अर्थात अब हम सभी पूर्णत: आजाद हो गए हैं। इसके अतिरिक्त हमारी जिन सीमाओं पर अतिक्रमण हुआ है, वे हमारे सामने प्रश्नचिह्न बनकर खड़ी हो गई हैं। विदेशी शासकों का राज्य खत्म होने के साथ ही उनकी प्रतिमाएँ अर्थात उनके चिह्नों को भी देश से उखाड़ फेंका जा रहा है। उनके स्थान पर हमारे स्वतंत्र देश के नए प्रतीक निर्मित हो रहे हैं।

*कृ.२. **आशय लिखिए:**
"ऊँची हुई मशाल हमारी...हमारा घर है।"

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ गिरिजाकुमार माथुर जी द्वारा रचित 'पंद्रह अगस्त' कविता से ली गई हैं। यहाँ कवि ने

Sample Content

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद समाज व देश की वर्तमान स्थिति का सूक्ष्म चित्रण किया है।

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि भविष्य में आने वाली परेशानियों के संदर्भ में देशवासियों को सचेत कर रहा है। कवि कहता है कि हमने स्वतंत्रता तो प्राप्त कर ली है, लेकिन प्रगति के पथ पर चलना आसान नहीं होगा। शत्रु आज हमारे घर से निकल गया है, लेकिन उसकी छाया अर्थात उसके लौट आने का खतरा हमेशा बना रहेगा। इतने समय तक लगातार शोषित किए जाने से हमारा समाज अभावग्रस्त होकर मृतक के समान हो गया है। आज हम बहुत कमजोर हैं। कवि के अनुसार हमारे पास जो कुछ भी था, उसे लूट लिया गया है। हमें एक बार फिर नए सिरे से अपने समाज और देश का निर्माण करना है।

रसास्वादन

कृ.१. निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर पंद्रह अगस्त कविता का रसास्वादन कीजिए:

१. रचनाकार का नाम

२. पसंद की पंक्तियाँ

३. पसंद आने के कारण

४. कविता का केंद्रीय भाव

उत्तर: १. गिरिजाकुमार माथुर

२. आज जीत की रात
पहरुए, सावधान रहना!
खुले देश के द्वार
अचल दीपक समान रहना।

३. ये पंक्तियाँ मुझे इसलिए पसंद है क्योंकि इनमें कवि ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लापरवाह न होते हुए सजग रहने की प्रेरणा सभी देशवासियों को दी है।

४. कवि ने यहाँ स्पष्ट किया है कि जब शोषित, पीड़ित और लगभग मृत हो चुके समाज का पुनरुत्थान होगा तभी सही मायने में भारत देश आजाद कहलाएगा।

***कृ.२. स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ समझते हुए प्रस्तुत गीत का रसास्वादन कीजिए।**

उत्तर: गिरिजाकुमार माथुर जी द्वारा लिखित पंद्रह अगस्त कविता 'धूप के धान' नामक काव्य-संग्रह से ली गई है। कवि ने यहाँ स्पष्ट किया है कि जब तक शोषित, पीड़ित और लगभग मृत हो चुके समाज का पुनरुत्थान नहीं होगा तब तक सही मायने में भारत देश आजाद नहीं कहलाएगा।

यहाँ कवि देश की रक्षा के लिए सीमा पर तैनात पहरेदारों के माध्यम से सभी देशवासियों को संबोधित करते हुए, उन्हें हर क्षण सतर्क रहने के लिए कह रहा है। आजादी के बाद वर्तमान समय में हमारा देश कई समस्याओं से जूझ रहा है। भारत से दुख की काली छाया अभी पूरी तरह से हटी नहीं है। हमें शोषित, पाड़ित और मृतक के समान हो चुके समाज के पुनरुत्थान हेतु कड़ा संघर्ष करना होगा। इन लक्ष्यों की पूर्ति के बाद ही हमारा देश सही मायने में स्वतंत्र व खुशहाल बन पाएगा। यह सब तभी संभव हो सकेगा जब सभी भारतवासी एक होकर देश के लिए विकास के लिए उसी तरह प्रयास करेंगे, जैसे उन्होंने स्वतंत्रता के आंदोलन को आगे बढ़ाया था। आज हमें एकता, बंधुता और देशभक्ति के मूल्यों को अपनाते हुए आगे बढ़ना चाहिए।

यह कविता गीत विधा में लिखी गई है। कविता में लयात्मक व सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है जिसके कारण यह कविता गेय बन गई है। कविता देशवासियों के मन में एक नया उत्साह व प्रेरणा पैदा करती है।

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

***कृ.१. जानकारी दीजिए:**

अ. गिरिजाकुमार माथुर जी के काव्यसंग्रह–

उत्तर: नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख चमकीले, जो बँध नहीं सका, साक्षी रहे वर्तमान, मैं वक्त के हूँ सामने आदि।

आ. 'तार सप्तक' के दो कवियों के नाम–

उत्तर: अज्ञेय और गजानन माधव 'मुक्तिबोध'।

भाषा अध्ययन (व्याकरण)

कृ.१. निम्नलिखित पंक्तियों में उद्धृत अलंकार पहचानकर उनके नाम लिखिए:

१. बंदऊँ गुरुपद पदुम परागा। सुरुचि सुवास सरस अनुरागा।

२. चिर जीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के बीर।।

उत्तर: १. अनुप्रास अलंकार २. श्लेष अलंकार

कृ.२. निम्नलिखित पंक्तियों में उद्धृत रस पहचानकर उनके नाम लिखिए:

१. गोमायु गीध कराल खर रव स्वान रोवहिं अति घने।
जनु कालदूत उलूक बोलहिं बचन परम भयावने।

२. मैं ऐसा शूर वीर हूँ, पापड़ तोड़ सकता हूँ।
अगर गुस्सा आ जाए तो कागज मरोड़ सकता हूँ।।

उत्तर: १. भयानक रस २. हास्य रस

Sample Content

कृ.३. निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए:

१. वह राजा से प्राणों की रक्षा की प्रार्थना करने लगी। (अपूर्ण वर्तमान काल)

२. वह घोर निराशा के अंधकार में भ्रमण कर रही थी। (पूर्ण भूत काल)

३. राजाराम घर की तरफ चल दिया। (सामान्य भविष्य काल)

४. कोई व्यक्ति पत्थर लेकर सामने नहीं आया। (सामान्य वर्तमान काल)

उत्तर: १. वह राजा से प्राणों की रक्षा की प्रार्थना कर रही है।

२. वह घोर निराशा के अंधकार में भ्रमण कर चुकी थी।

३. राजाराम घर की तरफ चला जाएगा।

४. कोई व्यक्ति पत्थर लेकर सामने नहीं आता है।

कृ.४. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए:

१. लड़के और लड़किया कक्षा में पढ़ रहे है।

२. जयसंकर प्रसाद ने कामायनी का रचना की।

३. संतोस गहरी साँस लेकर रूका।

४. वर्तमान युग में संगणक का महत्व बड़ गया है।

उत्तर: १. लड़के और लड़कियाँ कक्षा में पढ़ रहे हैं।

२. जयशंकर प्रसाद ने कामायनी की रचना की।

३. संतोष गहरी साँस लेकर रुका।

४. वर्तमान युग में संगणक का महत्त्व बढ़ गया है।

कृ.५. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य पुन: लिखिए:

१. हिंदी के चर्चित पत्र पत्रिकाओं कहानियों उपन्यासों आदि की रचना आपने की है

२. सुबरन के अर्थ सुंदर शब्द सुंदर स्त्री और सोना

३. सूरज ने कहा तुम यहाँ से भाग जाओ

४. राजेश ने अंतत: पेड़ों को क्यों बचा लिया

उत्तर: १. हिंदी के चर्चित पत्र-पत्रिकाओं, कहानियों, उपन्यासों आदि की रचना आपने की है।

२. सुबरन के अर्थ – सुंदर शब्द, सुंदर स्त्री और सोना।

३. सूरज ने कहा, "तुम यहाँ से भाग जाओ।"

४. राजेश ने अंतत: पेड़ों को क्यों बचा लिया?

कृ.६. निम्नलिखित शब्दों के लिए हिंदी पारिभाषिक शब्द लिखिए:

१. Finance Commissioner

२. Deduction

३. Dividend

४. Domicile Certificate

५. Draft

६. Gazette

उत्तर: १. वित्त आयुक्त

२. कटौती

३. लाभांश

४. अधिवास प्रमाणपत्र

५. मसौदा/प्रारूप

६. राजपत्र

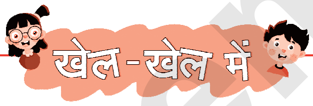

• **कारक ढूँढ़कर लिखिए:**

सी	सं	ली	ची	क	सं	ती
की	टी	बं	ली	र्म	बो	सं
क	र	अ	ध	हु	ध	प्र
मी	र	र्य	पा	र्ण	न	दा
नी	सू	ण	पू	दा	क	न
अ	धि	क	र	ण	न	र्ता

१. ____________ २. ____________

३. ____________ ४. ____________

५. ____________ ६. ____________

७. ____________ ८. ____________

उत्तर:
१. संबंध २. कर्म ३. संबोधन
४. संप्रदान ५. करण ६. अधिकरण
७. कर्ता ८. अपादान

Sample Content

AVAILABLE NOTES FOR STD. XI & XII:

SCIENCE

Perfect Series:

For students who want to excel in board exams and simultaneously study for entrance exams.

- Physics Vol. I
- Physics Vol. II
- Chemistry Vol. I
- Chemistry Vol. II
- Mathematics & Statistics Part - I
- Mathematics & Statistics Part - II
- Biology Vol. I
- Biology Vol. II

Precise Series:

For students who want to excel in board exams.

- Physics
- Chemistry
- Biology

Additional Books for Std. XII Science:

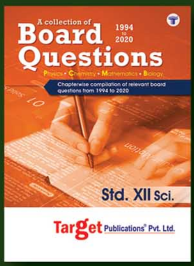

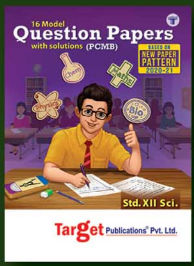

COMMERCE

Smart Notes:

- Book-Keeping and Accountancy
- Book Keeping and Accountancy (Practice)
- Economics
- Organisation of Commerce and Management
- Secretarial Practice
- Mathematics and Statistics - I
- Mathematics and Statistics - II

ARTS

- History
- Geography
- Political Science
- Psychology
- Sociology

Books available for MHT-CET, NEET & JEE

Languages:

- English Yuvakbharati
- Hindi Yuvakbharati
- Marathi Yuvakbharati

OUR PRODUCT RANGE

Children Books | School Section | Junior College
Degree College | Entrance Exams | Stationery

Visit Our Website

Target Publications® Pvt. Ltd.
Transforming lives through learning

Address:
2nd floor, Aroto Industrial Premises CHS,
Above Surya Eye Hospital, 63-A, P. K. Road,
Mulund (W), Mumbai 400 080
Tel: 88799 39712 / 13 / 14 / 15
Website: www.targetpublications.org
Email: mail@targetpublications.org

Explore our range of STATIONERY